आदिवासी रंगमंच का प्रस्तुतिपरक अध्ययन

(विशेष सन्दर्भ में 'धरती आबा' और 'फेविकोल')

Performance Study of Tribal Theater

(In the context of Play : 'Dharti Aaba' and 'Fevikol')

एम.फिल. प्रदर्शनकारी कला (फिल्म और नाटक) उपाधि हेतु

लघु शोध – प्रबंध

सत्र : 2015- 16

शोधार्थी मनीष कुमार

पंजीयन सं. –2015/07/204/008

प्रदर्शनकारी कला (फिल्म और नाटक) विभाग, साहित्य विद्यापीठ

महात्मा गाँधी अंतर्राष्ट्रीय हिंदी विश्वविद्यालय

संसद द्वारा पारित अधिनियम 1997 क्रमांक 3 के अंतर्गत स्थापित केन्द्रीय विद्यालय,

गाँधी हिल्स, वर्धा – 442005 (महाराष्ट्र)

अनुक्रमणिका

पृष्ठ सं

प्रमाण पत्र

घोषणा

आभार

अनुक्रमणिका

भूमिका *1 – 3*

शोध संरचना *4 – 8*

- *शोध का उद्देश्य*
- *शोध का महत्त्व*
- *शोध समस्या एवं प्रश्न*
- *शोध प्रविधि*

साहित्य पुनरावलोकन *9 – 16*

अध्याय एक – रंगमंच का स्वरूप एवं विकास *17 – 26*

- पाश्चात्य रंगमंच

- भारतीय रंगमंच

अध्याय दो – आदिवासी रंगमंच *27 – 36*

- परिकल्पना
- स्वरूप

अध्याय तीन आदिवासी रंगमंच का इतिहास– *37 – 43*

- *उदभव*
- *विकास*

अध्याय चार – वर्तमान आदिवासी रंगमंच का स्वरूप *44 – 70*

- आदिवासी नाटकों में आदिवासी रंगमंच
- लेखक
    - नाटककार : हृषिकेश सुलभ
    - नाटककार : जीताराई हांसदा
    - नाटककार : रोज़ केरकेट्टा
    - नाटककार : रघुनाथ मुर्मू
    - नाटककार : लको बोदरा
- नाटक
    - धरती आबा
    - फेविकोल

- प्रस्तुतियां
    - निर्देशक : संजय उपाध्याय
    - निर्देशक : जीताराई हांसदा

उपसंहार *71 – 73*

परिशिष्ट – साक्षात्कार *74 – 75*

सन्दर्भ सूची *76 – 79*

भूमिका

आदिवासी का शाब्दिक अर्थ है – आदिम युग में रहने वाली जातियां। मूलतः यह वे जातियां है जो 5000 वर्ष पुरानी भारतीय सभ्यता को सजोये हुए है। यह भी प्रमाण मिलता है कि औपनिवेशिक युग के पूर्व आदिवासियों की अपनी स्वतन्त्र रहती थी। जल, जंगल, जमीन और प्रकृति के संसाधनों पर उनका अधिकार था। परन्तु जैसे – जैसे साम्राज्यवादी ताकतें बढती गयी, औपनिवेशिक सताएं मजबूत होती गयी, वैसे – वैसे आदिवासियों का शोषण और उन पर अत्याचार बढ़ता गया। उनके संसाधनों पर जबरन कब्ज़ा किया जाने लगा, उन्हें अपनी जमीन से बेदखल किया जाने लगा। यह भी कि अपनी स्वायत्ता और अस्मिता के लिए जितना और जिस व्यापक पैमाने पर आदिवासियों ने विद्रोह किया, उतना देश के किसी अन्य समाज ने नहीं किया।

आदिवासियों का इतिहास बहुत प्राचीन है तथा तभी से इसके इतिहास की स्मृति को भी मिटाने का प्रयास निरंतर किया गया है खनिज, वनोपज, जल, भूमि आदि के साथ – साथ आदिवासी संस्कृति को भी उत्पाद समझ कर व्यापार के योग्य बनाया जा रहा है। आदिवासियों के रहन – सहन, बोलियों जीवन यापन, संगीत, नृत्य, कलाओं आदि की समुच्चय संस्कृति विश्व स्तर की नई नीतियों की वस्तु बना दिए जाने से आदिवासी संस्कृति सुगठन के बदले व्यापक व्यवस्था में तब्दील हो जाएगी। इसलिए आदिवासी संस्कृति वह जीवन शैली है जो समता, बंधुता, मानवता, प्रेम तथा विश्वास आदि मूल्यों पर टीका है। वर्तमान में आदिवासी समाज अपनी संस्कृति को बाहरी हमलावरों से बचाने को संघर्षरत है।

आदिवासियों के बारे में बहुत से साहित्य लिखे गये है तथा आज भी लिखे जा रहे है। पिछले दो दशकों में आदिवासी साहित्य जो लिखा गया, उसका एक अपना अलग महत्व है। लेकिन आदिवासी

साहित्य को पढ़ नहीं पाते, जबकि नाटक के माध्यम से वे सीधे रूप में समाज से संवाद स्थापित कर पाते है और अपनी चुनौतियों को एक स्वर देने के लिए प्रेरित होते है। स्वाभाविक है कि औपनिवेशिक एवं उत्तर औपनिवेशिक दौर में जो आधुनिक आदिवासी रंगमंच विकसित हुआ उसमे शासक वर्गों की सौन्दर्यशास्त्रीय दृष्टि का प्रतिकार, नए लोकतान्त्रिक विश्वव्यवस्था में अपनी अवस्था के प्रति आलोचनात्मक रुख और आदिवासी विश्वदृष्टि की स्थापना प्रमुख स्वर है।

आदिवासी रंगमंच चाहे परम्परागत हो या आधुनिक दोनों की रंगभाषा समान है। सहभागिता, समानता, सहअस्तित्व, सहजीविता और सामूहिकता के उनके जीवन दर्शन को अभिव्यक्त करने वाली। प्रकृति और इन्सान, इन्सान और समस्त जीवजगत एवं इन्सान और इंसानियत के प्राथम्कि रिश्ते से सम्बद्ध। आदिवासियों का यह अटूट विश्वास है कि इंसानियत की कल्पना प्रकृति और समष्टि के बिना संभव नहीं है। उसके विश्वदृष्टिकोण में हर सजीव और निर्जीव वस्तु जीवन के लिए अपरिहार्य है। परम्परागत आदिवासी नाटकों में प्रकृति, समष्टि और इन्सान के सहभागी व सहजीवी अस्तित्व का निर्मल चित्रण है, सह अस्तित्व के पारस्परिक विश्वास और इतिहास के स्मृतियों का उदात्त सांगीतिक व दृश्यात्मक आख्यान गान है।

आदिवासियों की पहली पढ़ी लिखी पीढ़ी के नाटककरों में रघुनाथ मुर्मू का संताली नाटक 'बिन्दू चन्दन' , लको बोदरा का 'हो' नाटक 'षार होरा', रोज़ केरकेट्टा का 'खड़िया' नाटक 'जुझइर डांड' नाटक हो, इन सभी में आधुनिक सभ्य समाज और सत्ता द्वारा प्रकृति और इन्सान के सहजीवी रिश्ते को बरबर्तापूर्वक छिन्न – भिन्न कर देने की गाथा है। यह पीड़ा भारत ही नहीं दुनिया भर में उभार ले रहे आधुनिक आदिवासी रंगमंच की प्रमुख प्रवृति है।

आदिवासी रंगमंच की विशेषता इसका प्रस्तुतिकरण का स्वरूप है। आदिवासी मुद्दों पर केन्द्रित इन नाट्य प्रस्तुतियों में आदिवासी समुदाय की भाषा, कला एवं संस्कृति का मंचीय प्रयोग करते हुए आदिवासी मुद्दों को सशक्त तरीके से समाज तक पहुँचाया जाता है। कई नाट्य प्रस्तुतियों में कलाकार स्वयं उसी समुदाय से होने के कारण नाटक अत्यंत जीवंत हो जाता है।

उपसंहार

प्राचीन आदिवासी रंगमंच लोक कथाओं पर आधारित रहा है। इसमें लोकनृत्य, लोक नाट्य तथा लोक गीत – संगीत आते है। प्राचीन आदिवासी रंगमंच पूरी तरह लोक संस्कृति तथा लोक सभ्यता पर आधारित था। जिसके कई सारे प्रमाण आज तक भी हमें नज़र आते है। लेकिन वर्तमान आदिवासी रंगमंच या कहे आधुनिक आदिवासी रंगमंच में आदिवासी जीवन की समस्याएं, आदिवासी जीवन की परम्पराएँ, आदिवासी अस्मिता, अस्तित्व व विस्थापन आदि जैसे विषय उभर कर आयें है। आज़ादी से पहले नज़र डाले तो ज्ञात होता है कि दलित रंगमंच ने पनपना प्रारम्भ कर दिया था। जो आज स्वयं में एक रंगमंच के रूप में स्थापित है। लेकिन आदिवासी रंगमंच ने पिछले एक– दो दशक से ही अपन वर्चस्व स्थापित करने का प्रयास किया है। जिस प्रकार दलित रंगमंच को स्थान देने वाले विषय शोषण, उत्पीडन इत्यादि रहे ।उसी प्रकार आदिवासी रंगमंच को स्थान देने वाले विषय भी कुछ इसी पर आधारित है। आदिवासी जीवन की पृष्ठभूमि पर पिछले एक – दो दशक से कई नाटक लिखे गये। इनके मंचन भी कई जगह हुए है। लेकिन इनको रंगमंच संसार में वह स्थान नहीं मिल पाया है जो इन्हें प्राप्त होना चाहिए। आदिवासी नाटकों को लिखने वाले नाटककर अपनी मातृभाषा में ही नाटक लिखते है। जो अपने भाषिक क्षेत्र में तो सफल होते है लेकिन उन्हें बाहरी क्षेत्र का व्यक्ति बड़ी कठिनाईयों से समझ पाता है। इन नाटकों के मंचन में भी कलाकार उसी भाषी समाज के होते है जिस भाषा में नाटक लिखा जाता है। इससे नाटक की आत्मीयता में एक जीवंतता भी आ जाती है।

रंगमंच के संसार का विकसित व विस्तार लेने पर आदिवासी रंगमंच को भी कई जगह स्थान प्राप्त हुआ है। राष्ट्रीय नाट्य विद्यालय में पिछले कई भारतीय रंग महोत्सवों में हमने आदिवासी पृष्ठभूमि के नाटक मंचित होते हुए देखे है। भारतीय आदिवासी पृष्ठभूमि के साथ – साथ अन्य देशों के आदिवासी

पृष्ठभूमि पर भी आधारित रहे भारतीय रंगमंच में राष्ट्रीय नाट्य विद्यालय की अहम् भूमिका है। इसमें देश के कोने – कोने से विद्यार्थी रंगमंच में भाग लेते है।तथा उसे ज्यादा से ज्यादा सिखने का प्रयास करते है। जो विद्यार्थी आदिवासी पृष्ठभूमि से आते है उन्हें यहाँ एक अलग माहौल प्राप्त होता है जिसे पाकर वह अपने क्षेत्र में विकसित करने का कार्य करते है। इस तरह से राष्ट्रीय नाट्य विद्यालय में भी आदिवासी विषय आधारित जानकारी व नाटक दिखाते है तथा अपने – अपने क्षेत्रों में भी इन नाटकों व जानकारियों को विस्तृत किया जाता है।

लोक (folk) आदिवासियों की परम्परा ही है। लोकनृत्य, लोक गीत – संगीत, लोक संस्कृति या लोक परम्परा तथा लोक नाट्यों में आदिवासियों की मनोरंजकता अधिक विद्यमान है। लोक से इतर देखे तो भावनाओं, कामनाओं, अकांक्षाओं, समस्याओं आदि को आदान – प्रदान करने के लिए रंगमंच अति आवश्यक है। आधुनिकता में आदिवासियों पर जिस तरह शोषण, उत्पीडन, विस्थापन आदि की समस्या नज़र आती है। इन सब समस्याओं को रखने के लिए आदिवासी साहित्य बड़े स्तर पर रचा जा रहा है। कई आदिवासी नाटकों को लिख कर अपनी समस्याओं को भी उठाया जा रहा है। रंगमंच को एक सशक्त माध्यम इसलिए कहा जाता है क्योंकि यह सीधे रूप से समाज से जुड़ता व जोड़ता है या यह कह सकते है कि रंगमंच एक ऐसा दर्पण है जो हर वर्ग के यथार्थ को हर वर्ग के समक्ष प्रस्तुत करता है। आदिवासियों के क्रांतिकारी आन्दोलन को भी आदिवासी रंगमंच द्वारा प्रस्तुत किया गया है।

इस शोध के माध्यम से प्रमाणों व तथ्यों के साथ – साथ तथा खोजबीन के आधार पर आदिवासी रंगमंच को स्थापित करने के साथ –साथ उनकी पीड़ाओं, समस्याओं आदि को भी प्रस्तुत करने का प्रयास किया है। रंगमंच की निरंतर बदलती विकसित प्रवृति के आधार पर आदिवासियों तथा गैर आदिवासी कलाकारों के माध्यम से किया गया, आदिवासी पृष्ठभूमि पर आधारित नाटक का